# संकल्प

SANKALP only 1st day

(दाहिने हाथ में जल, फूल व चावल ले कर संकल्प मन्त्र पूजा प्रारम्भ के प्रथम दिन बोलें) see attachment

## दुर्गा सप्तशती अध्याय 11 का पाठ 9 दिन लगातार करें

॥ ध्यानम् ॥ हाथ जोड़ कर ध्यान करें

**Samputit Mantra -1**

ॐ बाल-रविद्युतिमिन्दु-किरीटां तुङ्गकुचां नयन-त्रय-युक्ताम्।
स्मेर-मुखीं वरदाङ्-कुशपाशा भीति करां प्रभजे भुवनेशीम्॥

**Samputit Mantra -2**

"ॐ" ऋषिरुवाच॥1॥

**Samputit Mantra -2**

देव्या हते तत्र महा सुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्नि-पुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टु-वुरिष्टलाभाद्* विकाशिवक्त्राब्ज-विकाशिताशाः*॥2॥

**Samputit Mantra -2**

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥3॥

**Samputit Mantra -2**

आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूप स्थितया त्वयैत- दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये॥4॥

**Samputit Mantra -2**

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥5॥

**Samputit Mantra -2**

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयै-कया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा रोक्तिः॥6॥

**Samputit Mantra -2**

सर्वभूता यदा देवी स्वर्ग-मुक्ति*प्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः॥7॥

**Samputit Mantra -2**

सर्वस्य बुद्धि-रूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गा-पवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥8॥

**Samputit Mantra -2**

कला-काष्ठादि-रूपेण परिणाम-प्रदायिनि।
विश्वस्यो-परतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते॥9॥

**Samputit Mantra -2**

सर्व-मङ्गल-मंङ्गल्ये* शिवे सर्वार्थ-साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥10॥

**Samputit Mantra -2**

सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्ति-भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥11॥

**Samputit Mantra -2**

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥12॥

**Samputit Mantra -2**

हंस युक्त विमानस्थे ब्रह्माणी रूप धारिणि।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥13॥

Samputit Mantra -2

त्रिशूल चन्द्राहिधरे महा-वृषभ वाहिनि।
माहेश्वरी स्व-रूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते॥14॥

Samputit Mantra -2

मयूर-कुक्कुट-वृते महा-शक्ति-धरेऽनघे।
कौमारी-रूप-संस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते॥15॥

Samputit Mantra -2

शङ्ख-चक्र-गदा-शाङ्र्ग गृहीत-परमायुधे।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते॥16॥

Samputit Mantra -2

गृहीतोग्र-महा-चक्रे दंष्ट्रोद्धृत-वसुंधरे।
वराह-रूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते॥17॥

Samputit Mantra -2

नृसिंह-रूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे।
त्रैलोक्य-त्राण-सहिते नारायणि नमोऽस्तु ते॥18॥

Samputit Mantra -2

किरीटिनि महावज्रे सहस्र-नयनोज्ज्वले।
वृत्र-प्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते॥19॥

Samputit Mantra -2

शिव-दूती-स्वरूपेण हत-दैत्य-महाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते॥20॥

Samputit Mantra -2

दंष्ट्राकरालवदने शिरोमाला-विभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते॥21॥

Samputit Mantra -2

लक्ष्मि लज्जे महा-विद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे* ध्रुवे।
महारात्रि* महाऽविद्ये* नारायणि नमोऽस्तु ते॥22॥

Samputit Mantra -2

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रविता-मसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते*॥23॥

Samputit Mantra -2

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति-समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥24॥

Samputit Mantra -2

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचन-त्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥25॥

Samputit Mantra -2

ज्वाला-कराल-मत्युग्र मशेषा-सुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥26॥

Samputit Mantra -2

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेना-पूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव॥27॥

Samputit Mantra -2

असुरासृग्वसापङ्क-चर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्॥28॥

Samputit Mantra -2

रोगानशेषा-नपहंसि तुष्टा रुष्टा* तु कामान् सकलान-भीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति॥29॥
Samputit Mantra -2
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या॥30॥
Samputit Mantra -2
विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे- ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्॥31॥
Samputit Mantra -2
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥32॥
Samputit Mantra -2

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥33॥
Samputit Mantra -2
देवि प्रसीद परिपालयनो-ऽरिभीते र्नित्यं यथा-सुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं* नयाशु उत्पात-पाकजनितांश्च महोपसर्गान्॥34॥
Samputit Mantra -2
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्य-वासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥35॥
Samputit Mantra -2
देव्युवाच॥36॥
Samputit Mantra -2
वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्॥37॥
Samputit Mantra -2
देवा ऊचुः॥38॥
Samputit Mantra -2
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्य-मस्मद्वैरि-विनाशनम्॥39॥
Samputit Mantra -2
देव्युवाच॥40॥
Samputit Mantra -2
वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्या- उत्पत्स्येते महासुरौ॥41॥
Samputit Mantra -2
नन्दगोपगृहे* जाता यशोदा-गर्भ-सम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचल-निवासिनी॥42॥
Samputit Mantra -2
पुनरप्यति-रौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान्॥43॥
Samputit Mantra -2
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्-महासुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमी-कुसुमोपमाः॥44॥
Samputit Mantra -2

ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्त-दन्तिकाम्॥45॥

**Samputit Mantra -2**

भूयश्च शतवार्षिक्या- मनावृष्ट्या-मनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा॥46॥

**Samputit Mantra -2**

ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः॥47॥

**Samputit Mantra -2**

ततोऽहमखिलं लोक मात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकै रावृष्टेः प्राणधारकैः॥48॥

**Samputit Mantra -2**

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्॥49॥

**Samputit Mantra -2**

दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले॥50॥

**Samputit Mantra -2**

रक्षांसि* भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राण-कारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्या-नम्र-मूर्तयः॥51॥

**Samputit Mantra -2**

भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति॥52॥

**Samputit Mantra -2**

तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्॥53॥

**Samputit Mantra -2**

भ्रामरीति च मां लोका तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति॥54॥

**Samputit Mantra -2**

तदा तदावतीर्याहं करिष्यामि-रिसंक्षयम्॥ॐ॥55॥

**Samputit Mantra -1**

इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी महात्मने
सत्य सन्तु संकल्पोक्त-कामः

(हाथ जोड़ कर प्रणाम करें)

हे देवी, मैंने जो संकल्प लिया वह सत्य हो

**SAMPUTIT MANTRA**

## पत्नी प्राप्ति के लिए

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीं
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्ता-अनुसारिणीं
तारिणीं दुर्ग-संसार सागरस्य कुलोद-भवाम

## पति प्राप्ति के लिए

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि ।
नन्द गोपसुतं देविपतिं मे कुरु ते नमः ॥

## पुत्र प्राप्ति के लिए

देवकीसुत **गोविन्द वासुदेव** जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गत:

## रोगनाशक मंत्र:

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभिष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्माश्रयतां प्रयान्ति॥

## मंगल कामना के लिए

सर्व-मङ्गल-मंङ्गल्ये* शिवे सर्वार्थ-साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते